

□□□□□□ :-

आवश्यकता से अधिक भोजन करना, इसलिए नहीं कि वह व्यक्ति जीवित रहे बल्कि भोजन के लिए जीवित रहना पेटपन है।

यह घातक पाप इसलिए है कि योंकि इसमें मनुष्य को प्राथमिकता उसका पेट होता है और वह आवश्यकता से अधिक भोजन कर अपने शरीर, समय तथा योग्यताओं का वनाश करता है।

बाइबल में पेटपन तथा पशुपन के दो श्रेणी में रखा गया है कि योंकि दोनों ही आत्मनियंत्रण खोने के अंतरगत आते हैं।

□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□?

1. □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□

“हे देश, तुझ पर हाथ जब तेरा राजा लड़क है और तेरे हाकिम प्रातः कल भोज करते हैं” (सभोपदेशक 10:16)

2. □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□

“हे देश, तू धनही है जब तेरा राजा कुलीन है; और तेरे हाकमि समय पर भोज करते हैं, और वह भी मतवाले होने को नहीं, वरन बल बढ़ाने के लिये।” (सभोपदेशक 10:17)

“और वे खाकर अतृप्त हुए, और उस ने उनकी कामना पूरी की। उनकी कामना बनी ही रही, उनका भोजन उनके मुंह ही में था।” (भजन संहिता 78: 29-30)

“जब तू किसी हाकमि के संग भोजन करने को बैठे, तब इस बात को मन लगाकर सोचना कमरे साम्ने हने कौन है? और यदि तू खाऊ हो, तो थोड़ा खाकर भूखा उठ जाना।” (नीतविचन 23:1-2)

3. □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□

“दाखमधु के पीनेवालों में न होना, न मांस के अधिक खानेवालों की संगत करना; क्वी यॉर्क पयिक्व क्व और खाऊ अपना भाग खोते हैं, और पीनक्माले के चथिड़े पहनिने पड़ते हैं”

(
नीतविचन
23:20-21)

□□□□□□□□ □□□□— (□□□□□□□□ 10:16-18)

4. □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□

“याक्वन्न भोजन के लिये कुछ दाल पक रहा था: और □ साव मैदान से थक हुआ आया□ तब □ साव ने याक्वन्न से कहा, वह जो लाल वस्त्र तु है, उसी लाल वस्त्र तु में से तुझे कुछ खलिा

,
क्वी यॉर्क मैं थक हूँ□ इसी कारण उसका नाम □ दोम् भी पड़ा□ याक्वन्न ने कहा

,
अपना पहलौंटे क अधिकर आज मेरे हाथ बेच दे□ □ साव ने कहा

,
देख

,
मैं तो अभी मरने पर हूँ

:
सो पहलौंटे के अधिकर से मेरा क्वी या लाभ होगा

?
याक्वन्न ने कहा

,
मुझ से अभी शपथ खा

:
सो उस ने उस से शपथ खाई

:
 और अपना पहलौटे का अधिकार याकूब के हाथ बेच डाला। इस पर याकूब ने साव को रोटी और पकई हुई मसूर की दाल दी
 ;
 और उस ने ख़ाया पया
 ,
 तब उठाकर चला गया। यों साव ने अपना पहलौटे का अधिकार तुच्छ जाना। ”
 (
 उत्पत्ति
 25:29-34)

“ऐसा न हो, कि कोई जन वृथ्वा भविकारी, या साव की नाई अधरमी हो, जिस ने कबार के भोजन के बदले अपने पहलौटे होने का पद बेच डाला। ” (इब्र
 नियों
 12:16)

“उन का अन्त वनिश है, उन का ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं, और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगा रहते
 हैं। ”
 (फ़िलिपियों 3:19)

5. □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□
 □□□ □□□ :

“यदि किसी के हठीला और दंगैत बेटा हो, जो अपने माता-पिता की बात न माने, किन्तु ताड़ना देने पर भी उनकी न सुने, तो उसके माता-पिता उसे पकड़-
 कर अपने नगर से बाहर फटककेनकट नगर के सयानों के पास ले जा।

,
 और वे नगर के सयानों से कहें
 ,
 कि हमारा बेटा हठीला और दंगैत है
 ,
 यह हमारी नहीं सुनता
 ;
 यह उड़ाऊ और पयिक् कह है ”
 (
 वक् यवस् था वविरण
 21:18-20)

“ली के पुत्र तो लुक् के थे; उन होंने यहोवा के न पहचाना और याजकों की रीत लोगों के साथ यह थी, कि जब कोई मनुष् य मेलबलि चढ़ाता था तब याजक का सेवक मांस पकाने के समय कर्त्रा शूली कंटा हाथ में लिये हु आकर उसे कहाही

,
 वा हांडी
 ,
 वा हंडे
 ,
 वा तसले के भीतर डालता था
 ;
 और जतिना मांस कंटे में लग जाता था उतना याजक आप लेता था यों ही वे शीलो में सारे इस्रा लियों से किया करते थे जो वहां आते थे और चर्बी जलाने से पहल्ले भी याजक का सेवक आकर मेलबलि चढ़ाने वाले से कहता था
 ,
 कि क्नाब केलिये याजक के मांस दे
 ;
 वह तुझ से पक हुआ नहीं
 ,
 क्क चा ही मांस लेगा और जब कोई उस से कहता
 ,
 कि नशि चय चर्बी अभी जलाई जा गी
 ,
 तब जतिना तेरा जी चाहे उतना ले लेना
 ,
 तब वह कहता था
 ,
 नहीं
 ,
 अभी दे
 ;

“सब वस्त्र तुम्हारे लिये उचित तो है, परन्तु सब वस्त्र तुम्हारे लाभ के नहीं, सब वस्त्र तुम्हारे लिये उचित है, परन्तु तुम किसी बात के आधीन न हूँगा
 भोजन पेट के लिये , और पेट भोजन के
 लिये है , परन्तु तुम

परमेश्वर इस के और उस के दोनों के नाश करेगा

,
 परन्तु तुम देह वस्त्र यथाचार के लिये नहीं

,
 वरन प्रभु के लिये

;
 और प्रभु देह के लिये है।”

(1 कुरन्थियों 6:12-13)

□□□□□□ □□ □□□□□□:-

1. अधिकमांस खाना और शराब पीकर मतवाला होना □ कही श्रेणी के घातकपाप माने गये हैं क्यूँकि दोनों ही परमेश्वर के मंदिर-हमारे शरीरों (जो परमेश्वर का मंदिर है) के हानि होती हैं।

“दाखमधु के पीनेवालों में न होना, न मांस के अधिक खानेवालों के संगत करना; क्यूँकि योर्क पयिक्ल कड़ और खाऊ अपना भाग खोते हैं, और पीनक्वाले के चथिड़े पहनिने पड़ते हैं।”
 (नीतविचन 23:20-21)

“और वे नगर के सयानों से कहें, कि हमारा यह बेटा हठीला और दंगैत है, यह हमारी नहीं सुनता; यह उड़ाऊ और पयिक्कू कह है” (वृ यवस् था वविरण 21:20)

“परन्तु तु यशूरुन मोटा होकर लात मारने लगा; तू मोटा और हृष् ट पुष् ट हो गया, और चरबी से छा गया है; तब उस ने अपने सृजनहार ईश्वर के तज दिया, और अपने उद्धारमूल चट्टान के तुच्छ जाना” (वृ यवस् था वविरण 32:15)

“दाखमधु के पीनेवालों में न होना, न मांस के अधकि खानेवालों की संगत करना” (नीतविचन 23:20)

2. पेटूपन से वृ यक्त्तियह भूल जाते हैं कि जीवन भोजन की अधकिई से नहीं होता परन्तु ईश्वर की देन है। ऐसे वृ यक्त्तियह प्रतिदिन की रोटी के लॉ न ही परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं और न ही उसे धन् यवाद देते हैं। वे भोजन को ही अपना ईश्वर मानते हैं।

“इसलिये सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि अपने परमेश्वर यहोवा के भूलकर उसकी जो जो आज्ञा, नियम, और वधि मैं आज तुझे सुनाता हूँ उनका मानना छोड़ दे; ऐसा न हो कि तब तू खाकर तृप्त हो, और अच्छे अच्छे घर बनाकर उन में रहने लगे, और तेरी गाय-बैलों और भेड़

-

बकरियों की बढ़ती हो

,

और तेरा सोना

,

चांदी और तेरा सब प्रकार का धन बढ़ जा

,

तब तेरे मन में अहंकर समा जा

,

और तू अपने परमेश्वर यहोवा के भूल जा

,

जो तुझे

,

के दासत्व व के घर अर्थात् मसिर देश से निकल लाया है

,

और उस बड़े और भयानक जंगल में से ले आया है

,

जहां तेज़ वषिवाले सर्प और बच्चे छू है

,

और जलरहति सूखे देख में उस ने तेरे लयि चक्मककी चट्टान से जल निकला

,

और तुझे जंगल में मन्ना खलिया

,

जैसे तुम्हारे पुरखा जानते भी न थे

,

इसलिये कि वह तुझे नम्र बना

,

और तेरी परीक्षा करके अन्त में तेरा भला ही करे और कहीं ऐसा न हो कि तू सोचने लगे

,

कि यह सम्पत्ति मेरे ही सामर्थ्य और मेरे ही भुजबल से मुझे प्राप्त हुई परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा के स्मरण रखता

,

की योंकि वही है जो तुझे सम्पत्ति प्राप्त करने का सामर्थ्य इसलिये देता है

,

कि जो वाचा उस न तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बान्नी थी थी उसके पूरा करे

,

और आज प्रगट है ”

(

वृत्त यवस् था वविरण

8:11-18)

“सो तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो। सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।” (1 कुरन्थियों 10:31)

“इन सब को तेरा ही आसरा है, कतू उनका आहार समय पर दिया करे। तू उन्हें देता है, वे चुन लेते हैं; तू अपनी मुट्ठी खोलता है और वे उत्तम पदार्थों से तृप्त होते हैं। तू मुख फेर लेता है

,
और वे घबरा जाते हैं

;
तू उनकी सांस ले लेता है

,
और उनके प्राण छूट जाते हैं और मट्टी में फेर मल जाते हैं। फिर तू अपनी ओर से सांस भेजता है

,
और वे सरिजे जाते हैं

;
और तू धरती को नया कर देता है।”

(
भजन संहिता

104:27-30)

“कई योंक परमेश्वर की सृष्टि हुई हर एक वस्तु अचूक है: और कोई वस्तु अस्वीकार करने के योग्य नहीं; पर यह कि धन्यवाद के साथ खाई जा। कई योंक परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के द्वारा शुद्ध हो जाती है।”

(1
तीमुथियुस
4:4-5)

“उन का अन्त वनिश है, उन का ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं, और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगा रहे हैं।”
(फलिपियों 3:19)

“हमारी दान भर के रोटी आज हमें दे” (मत्ती 6:11)

3. पेट्रुस व व्यक्ति को ऐसी सू वार्थपरता की ओर प्रेरित करता है जिसमें व्यक्ति दूसरे भूखे लोगों के प्रति संवेदनहीन हो जाता है

“क धनवान मनुष्य था जो बैजनी कपड़े और मलमल पहनिता और प्रतिदिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था और लाजर नाम का क कांाल व्यक्तिघावों से भरा हुआ उसके फटकपर छोड़ दिया जाता था उस धनवान की मेज़ से जो टुकड़े गरिते थे उनसे वह पेट भरने के तरसता था”
(
लूक
16:19,21)

“यदि मुरदे जलित नहीं जाँगे, तो आओ, खाँ-पीँ, क् योर्क क्ल तो मर ही जाँगे” (1 कुरन्थियों 15:22)

“फरि जब तुम अपने देश के खेत कटो तब अपने खेत के केने केने का पूरा न कटना, और कटे हुए खेत की गरि पड़ी बालों के न चुनना और अपनी दाख की बारी का दाना दाना न तोड़ लेना , और अपनी दाख की बारी के झड़े हुए अंगूरों के न बटोरना ; उन् हैं
दीन और परदेशी लोगों के लथि छोड़ देना
;
मै तुम् हारा परमेश्वर यहोवा हूँ”
(
लैव यव यवस् था
19:9,10)

“जब तुम अपने देश में के खेत कटो, तब अपने खेत के केनों के पूरी रीतसे न कटना, और खेत में गरी हुई बालों के न इक्का करना; उसे दीनहीन और परदेशी के लिये छोड़ देना

;

मैं तुम्हें हारा परमेश्वर यहोवा हूँ ”

(

लैव् यव् यवस् था

23:22)

“परन्तु कृया देखा कर्हरष और आनन्द मनाया जा रहा है, गाय-बैल क घात और भेड़-बकरी क वध किया जा रहा है, मांस खाया और दाखमधु पीया जा रहा है और कहते हैं

,

आओ खा

-

पी

,

कृ योक्कल तो हमें मरना है ”

(

यशायाह

22:13)

4. पेटूपन व् यक्ता के नरिधन बना सकता है

“कृ योक्कल पयिक् कृ और खाऊ अपना भाग खोते है, और पीने वाले के चथिड़े पहनिने पड़ते हैं ” (नीतविचन 23:21)

“उन का अंत वनिश है, उन का ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा का बातों पर घमण्ड करते हैं, और पृथ्वी की वस्त्रों पर मन लगा रहे हैं”
(फ़िलिपियों 3:19)

“पर जो भोग-विलास में पड़ गई, वह जीते जी मर गई है” (1 तीमथियुस 5:6)

5. पेटूपा से वृत्त शरीर की लालसा का गुलाम होकर अन्वय बहुत सी बुराइयों में पंसा सकता है

“यदि किसी के हठीला और दंगैत बेटा हो, जो अपने माता पिता की बात न माने, कन्वितु ताड़ना देने पर भी उनकी न सुनें, तो उसके माता-पिता उसे पकड़कर अपने नगर से बाहर फटकके नक्किल नगर के सयानों के पास ले जावें

,
और वे नगर के सयानों से कहें

,
कहें हमारा यह बेटा हठीला और दंगैत है

,
यह हमारी नहीं सुनता

;
यह उड़ाऊ और पयिक्कू कह है”

(
वृत्त यक्स्व था वविरण

21:18-20)

□□□□□□□□ □□□□□— (□□□□□□□□ 23:21)□

“मेरा मन किसी बुरी बात की ओर परिने न दे; मैं अनर्थकारी पुरुषों के संग, दुष्टों में न लगूं, और मैं उनके सुवादीष्टों में भोजनवस्तुओं में से कुछ न खाऊं”

(भजन संहिता 141:4)

“जैसा दिन हो सोहता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें; न कं लीला क्रीड़ा, और पयिक्कड़, न व्यभिचार, और लुचपन में, और न झगड़े और डाह में वरन प्रभु यीशु मसीह के पहनि लो

,
और शरीर के अभिलाषाओं के पूरा करने का उपाय न करो”

(
रोमियों
13:13-14)

6. पेटूण से व्यक्तिक शरीर, समय, और जीवन बर्बाद हो सकता है परमेश्वर का निर्भरता घटती है उसकी आज्ञाओं की अवहेलना होती है यह वभिन्नि न बुराईयों की शुरुआत का कारण होता है

□□□□□□ □□ □□□□ □□□?

1. □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□:□□

“और यदि तू खाऊ हो, तो थोड़ा खाकर भूखा उठ जाना” (नीतविचन 23:2)

3. □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□

“इस संसार के धनवानों के आज्ञा दे, क्वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, वरन् परमेश्वर पर जो हमारे सुख केलिये सब कुछ बहुतायत से देता है और भलाई करें , और भले कर्मों में धनी बनें ; और उदार और सहायता देने में तत्पर हों ”

(1
तीमुथियुस
6:17-18)

“दया करने वाले पर आशीष फलती है, क्वे योर्क वह कंगाल के अपनी रोटी में से देता है ” (नीतविचन 22:9)

“जसि उपवास से मै परसन् न होता हूं, वह क्वे या यह नहीं, क्वे अन् याय से बना हु दासों, और अन् धेर सहनेवालों क जूआ तोड़कर उनके छुड़ा लेना , और, सब जूओं के टुकड़े टुकड़े कर देना? क्वे या वह यह नहीं है क्वे अपनी रोटी भूखों के बांट देना

,
अनाथ और मारे
-
मारे फिरते हुआओं के अपने घर ले आना
,
कस्सी के नंगा देखकर वस्त्र पहनाना
,
और अपने जातभाइयों से अपने के न छपाना ”

(
यशायाह
58:6-7)

“और तुम में से कोई उन से कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्ति त रहो; पर जो वस्त्र तुम्हें देह केलयि आवश्क यकहै वह उन्हे हैं न दे, तो कृया लाभ”

(

याकून्न

2:16)

“कृया योर्क मै भूखा था, और तुम ने मुझे खाने के नहीं दिया, मै पयिासा था, और तुम ने मुझे पानी नहीं पलिया” (मत्ती ती 25:42)

4. □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□

“यीशु ने उन से कहा, मेरा भेजन यह है, कअपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसक कम पूरा कूं” (यूहन्ना ना 4:34)

“और दाखरस से मतवाले न बनो, कृया योर्क इस से लुचपन होता है, पर आत्मा से परपूरण होते जाओ” (इफसियों 5:18)

5. □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□

□□□□□

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्द्रा दु लाल

गुरुवार, 11 अक्टूबर 2007 18:23 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:22

□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□